संस्कृत कवि-गोष्ठी

पंडित विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि के अवसर पर 14 फरवरी को संस्कृत कवि-गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता आचार्य पं. रेवा प्रसाद द्विवेदी ने की। इसमें सम्मिलित कवि कमलेश दत्त त्रिपाठी, श्री कौशलेन्द्र पाण्डेय, श्री उपेन्द्र पाण्डेय, श्री प्रभुनाथ द्विवेदी, श्री धर्मदत्त चतुर्वेदी, श्री गायत्री प्रसाद पाण्डेय, श्री सदाशिव द्विवेदी, श्री विवेक पाण्डेय, श्री राजा राम शुक्ल, श्री शिवराम शर्मा, श्री राममूर्ति चतुर्वेदी, श्री विजय कुमार पाण्डेय, सुश्री कमला पाण्डेय ने पं. विद्यानिवास मिश्र के जीवन के विविध पक्षों को रेखांकित करने वाली संस्कृत कविताएँ प्रस्तुत कीं। सरस और सटीक कविताओं ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कविगोष्ठी का संचालन श्री हरि प्रसाद अधिकारी ने किया।

पाँचवाँ विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान

13-14 दिसम्बर, 2010 को **'भक्तिकाव्य : कबीर, सूर, तुलसी'** पर केन्द्रित पाँचवाँ विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान हिन्दी विभाग, श्री बलदेव पी.जी. कॉलेज, बड़ागाँव, वाराणसी के सहयोग से इसी महाविद्यालय के सभागार में आयोजित किया गया। इसके अन्तर्गत भक्तिकाव्य और कबीर पर प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल, भक्तिकाव्य और तुलसी पर प्रो. अनन्त मिश्र एवं भक्तिकाव्य और सूर पर प्रो. अवधेश प्रधान के विस्तृत एवं सुचिन्तित व्याख्यान हुए। प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल ने प्रेम को कबीर-काव्य की धुरी के रूप में स्थापित किया। उन्होंने कबीर वाणी को हाशिये की आवाज कहने वालों से अपनी असहमति व्यक्त की। प्रो. अनन्त मिश्र ने तुलसी को भारतीय जीवन में सर्वाधिक व्याप्त बताया। प्रो. अवधेश प्रधान ने सूर की गोपियों के प्रेम को भक्ति का परमादर्श बताया।

आयोजन में विशेष रूप से आमंत्रित प्रो. नामवर सिंह ने भक्तिकाव्य से अलग हटकर अपना व्याख्यान अज्ञेय पर केन्द्रित किया। अज्ञेय जीके सम्बन्ध में कई रोचक संस्मरणों के साथ उनके सरल, सहज, स्वाभिमानी, उदार और विराट व्यक्तित्व को प्रस्तुत करते हुए नामवर जी इस धारणा को धोने में बहुत हद तक कामयाब हुए कि वे दोनों आजीवन एक-दूसरे के धुर विरोधी रहे।

समापन सत्र में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ने सभी सत्रों की प्रमुख स्थापनाओं का विश्लेषण करते हुए, छात्र-छात्राओं के प्रश्नों, प्रतिप्रश्नों और जिज्ञासाओं का समाधान किया। इन व्याख्यानों का संयोजन प्रकाश उदय, डॉ. राम सुधार सिंह एवं डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी ने किया।

भक्ति साहित्य के तीनों सत्रों के आरंभ में पं. विद्यानिवास मिश्र के आलेख बीज वक्तव्य के रूप में पढ़े गए- 'मरजीवा कबीर', 'मध्यकालीन काव्य के परिप्रेक्ष्य में तुलसी की कविता' और 'सूर साहित्य : नए परिप्रेक्ष्य में'- जिनका पाठ किया क्रमशः डॉ. दयानिधि मिश्र, डॉ. प्रकाश उदय एवं डॉ. सविता श्रीवास्तव ने। प्राचार्य डॉ. उदयन मिश्र ने अतिथियों का स्वागत किया।